अनुसिंह चौधरी की कहानियों में अभिव्यक्त नारीः एक अनुशीलन

शोर्धार्थी बबीता देवी

जयोति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (हिंदी विभाग)

निर्देशिका : डॉ चित्रा

सारः

इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि अनुसिंह चौधरी की कहानियों में नारी की विभिन्न स्थितियों का बड़ी बारीकी के साथ चित्रण हुआ है उन्होंने अपनी कहानियों में ना केवल नारी की सामाजिक स्थिति बल्कि आर्थिक धार्मिक और राजनीतिक स्थिति का बड़ा मार्मिक चित्रण दर्शाया है। अनुसिंह चौधरी एक सुलझी हुई लेखिका हैं उन्होंने अपनी कहानियों के द्वारा समाज को आईना दिखाने का प्रयास किया है कि जिस स्त्री को त्याग और प्रेम की मूर्ति कहा जाता है उसी के जन्म पर शोक मनाया जाता है। आज भी पुरुष जाति स्त्री को मात्र भोग विलास की वस्तु ही मानता है जबकि स्त्री किसी की बेटी, किसी की पत्नी व किसी की मां, किसी की प्रेमिका व अन्य विभिन्न रूपों में पुरुष को स्त्री समाज थी वह बनाती है।

1. परिचय :

पारंपरिक पुरुषों के लिए, महिलाओं को उनके घरों में सीमित और प्रतिबंधित कर दिया गया है, उपेक्षित किया गया है और सार्वजनिक डोमेन में पनपने से रोका गया है। हालांकि, हमेशा असाधारण और असाधारण महिलाएं रही हैं, जिन्होंने पितृसत्ता की सीमाओं से ऊपर उठकर जीवन के हर पहलू में क्रांतिकारी हलचल पैदा की है।

साहित्य की दुनिया में, अन्नू सिंह चौधरी ने महत्वपूर्ण सवाल उठाने और समाज में बदलाव लाने में बड़ा योगदान दिया है। हालाँकि इतिहास में बदलाव नहीं किया जा सकता है, फिर भी उन्हें साहित्य के माध्यम से फिर से लिखा जा सकता है और इसलिए अन्नू सिंह चौधरी द्वारा प्रेरक लेखन के माध्यम से साबित किया जाता है।

पारंपरिक संयुक्त परिवार बड़े करीने से संरचित हैंय वहां कुछ महिलाएं दूसरों पर अधिक अधिकार के साथ प्रमुख भूमिका मानती हैं। जटिल संरचना गहराई से अंतर्निहित है और असमान रूप से रखी गई महिलाओं की व्यक्तिगत त्रासदियों की अनगिनत कहानियों को जन्म दिया है। उनकी असमान स्थिति उनके जीवन में बहुत दुख, कष्ट और कठिनाई पैदा करती है, जिससे उन्हें धार्मिक विनम्रता और व्यक्तिगत त्याग की भावना से दमनकारी व्यवस्था को स्वीकार करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

यह एक पारिवारिक और सामाजिक तंत्र का परिणाम है जो पारंपरिक भारतीय समाज में सदियों से विकसित हुआ है। यह एक खुला रहस्य है कि परिवार समाज के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कोई भी अन्य मानव समूह नहीं है जो परिवार से अधिक व्यक्तियों के जीवन पर हावी है। यह इस कठिन तथ्य के प्रकाश में है कि, मैकिवर कहते हैं, ''सभी संगठनों में, बड़े या छोटे, जो समाज को प्रकट करता है, कोई भी परिवार को इसके समाजशास्त्रीय महत्व की तीव्रता में स्थानांतरित नहीं करता है। यह असंख्य तरीकों से समाज के पूरे जीवन को प्रभावित करता है, और इसके परिवर्तन, पूरे सामाजिक ढांचे के माध्यम से पुनर्जीवित होते हैं।

2. योगिता यादव के जीवन मूल्य

अनुसिंह चौधरी एक सुलझी हुई लेखिका है उन्होने अपनी कहानियों के द्वारा समाज को आईना दिखने का प्रयास किया है कि जिस स्त्री को त्याग और प्रेम की मूर्ति कहा जाता है उसी के जन्म पर शोक मनाया जाता है। आज भी पुरूष जाति स्त्रे को मात्र भोग विलास की वस्तु ही मानता है जब कि स्त्री किसी की बेटी, किसी की पत्नी व किसी की माँ, किसी को स्त्री संवारती व बनाती है। नर का नारी के प्रति तथा नारी का नर के प्रति पवित्र दृष्टिकोण होना, आत्मोन्नति सामाजिक प्रगति एवं सुख– शांति के लिए आवश्यक है। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करने वाले, अविवाहित नर– नारियों के लिए व्यवहार एवं चिंतन में एक– दूसरे के प्रति पवित्रता का समावेश अनिवार्य है ही, किन्तु अन्यों को भी उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अपवित्र पाशविक दृ ष्टि रखकर कोई भी वर्ग, दूसरे वर्ग की श्रेष्ठता का न तो मूल्यांकन कर सकता है और न उनका लाभ उठा सकता है। इस हानि से बचने की अत्यधिक उपयोगी प्रेरणा इस वाक्य में दी गई है।

'नारी इस संसार की सर्वोत्कृष्टता पवित्रता है।' जननी के रूप में वह अगाध वात्सल्य लेकर इस धरती पर अवतीर्ण होती है। पत्नी के रूप में त्याग और बलिदान की, प्रेम और आत्मदान की सजीव प्रतिमा के रूप में प्रतिष्ठित होती है। बहन के रूप में स्नेह, उदारता और ममता की देवी जैसी परिलक्षित होती है। पुत्री के रूप में वह कोमलता, मृदुलता, निश्छलता की प्रतिकृति के रूप में इस नीरस संसार को सरस बनाती रहती है। परमात्मा ने नारी में सत्य, शिव और सुंदर का अनंत भंडार भरा है। उसके नेत्रों में एक अलौकिक ज्योति रहती है, जिसकी कुछ किरणें पड़ने मात्र से निष्ठुर हृदयों की भी मुरझाई हुई कली खिल सकती है। दुर्बल, अपंग मानव को शक्तिमान और सत्ता सम्पन्न बनाने का सबसे बड़ा श्रेय यदि किसी को हो सकता है तो वह नारी का ही है। वह मूर्तिमान प्रेरणा, भावना और स्फूर्ति के रूप में अचेतन को चेतन बनाती है। उसके सान्निध्य में अकिंचन व्यक्ति का भाग्य मुखरित हो उठता है। वह अपने को कृत– कृत्य हुआ अनुभव करता है।

नारी की महत्ता अग्नि के समान है। अग्नि हमारे जीवन का स्रोत है, उसके अभाव में हम निर्जीव और निष्प्राण बनकर ही रह सकते हैं। उसका उपयोगिता की जितनी महिमा गाई जाए, उतनी ही कम है, पर इस अग्नि का दूसरा पहलू भी है, वह स्पर्श करते ही काली नागिन की तरह लपलपाती हुई उठती है और छूते ही छटपटा देने वाली, भारी पीड़ा देने वाली परिस्थिति उत्पन्न कर देती है। नारी में जहाँ अनंत गुण हैं, वहाँ एक दोष ऐसा भी है जिसके स्पर्श करते ही असीम वेदना से छटपटाना पड़ता है। वह रूप है– नारी का रमणी रूप। रमण की आकांक्षा से जब भी उसे देखा, सोचा और छुआ जाएगा तभी वह काली नागिन की तरह अपने विष भरे दंत चुभो देगी। बिच्छू की बनावट कैसी अच्छी है, पर उसके डंक को छूते ही विपत्ति खड़ी हो जाती है। मधुमक्खी कितनी उपकारी है। भौंरा कितना मधुर गूँजता है, काँतर कैसे रंग– बिरंगे पैरों से चलती है, बर्र और ततैया अपने छत्तों में बैठे हुए कैसे सुंदर गुलदस्ते से सजे दीखते हैं, पर इनमें से किसी का भी स्पर्श हमारे लिये विपत्ति का कारण बन जाता है। नारी के कामिनी और रमणी के रूप में जो एक विष की छोटी– सी पोटली छिपी हुई है, उस सुनहरी कटार से हमें बचना ही चाहिए।

3. अनुसिंह चौधरी की कहानियों में अभिव्यक्त नारीः

अनु सिंह की कहानी ''रूममेट्स'', चार रूममेट्स की कहानी है, जो सिंगल रूम शेयर करती हैं। यह कहानी उन महिलाओं की भावना और समस्या को व्यक्त करती है, जो शादी करने जा रही हैं और जो इन समस्याओं को साधारण मस्ती के साथ छिपाने की कोशिश करती हैं।

अनु सिंह चतुराई से स्त्री की भावना को व्यक्त करती हैं, और दिखाते हैं कि जो महिला पुरुष के प्रभुत्व से गहराई से पीड़ित है, वह बिना किसी कारण के उसे तलाक दे सकता है। पुरुष के इस तरह के फैसलों से नारी का जीवन पूरी तरह से बदल जाता है, सिर्फ इसलिए कि उन्हें अब इन रिश्तों में कोई दिलचस्पी नहीं है। जब आप अपनी शादी के उत्साह में फंस जाते हैं, तो यह कल्पना करना मुश्किल हो सकता है कि आप और आपका जीवनसाथी कभी खुशी से नहीं रह सकते। लेकिन अपने जीवन को किसी अन्य व्यक्ति के साथ साझा करना एक चुनौती हो सकती है, खासकर यदि आप रिश्तों के साथ बहुत अधिक अनुभव नहीं रखते हैं। शादियां काम, प्रतिबद्धता और प्यार लेती हैं, लेकिन उन्हें वास्तव में खुश और सफल होने के लिए सम्मान की आवश्यकता होती है।

अन्नू सिंह ने ''हाथ की लकीरें'' कहानी में अमीरों के साथ–साथ गरीब परिवार में भी महिलाओं की स्थिति को समझाया है। धनी परिवार में भले ही वह परिवार में सभी सुख–सुविधाओं का उपभोग कर रही हो, लेकिन विवाह का सम्बन्ध यह है कि उसने पुत्र को जन्म देना है । एक बार परिवार के सदस्यों की यह अपेक्षा पूरी हो जाने के बाद, वह उनकी आँखों में सम्मान प्राप्त करती है, अन्यथा उसके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है।

इस तरह हमें यह समझना चाहिए कि महिलाओं के लिए शक्ति और सम्मान की समानता के लिए आंदोलन महिलाओं को बनाकर पारिवारिक जीवन को मजबूत करने के लिए एक बल का प्रतिनिधित्व करता है जो उन रिश्तों के प्रकार पर जोर देग जो वास्तविक प्रेम और अंतरंगता के लिए वास्तविक क्षमता रखते हैं। पारिवारिक जीवन का टूटना अक्सर निम्न पैटर्न पर आधारित होता थाः महिलाओं को परिवार में अधीनस्थ और गैर–सम्मानित भूमिकाओं में और धीरे–धीरे नाराजगी और क्रोध का निर्माण किया जाता है जब तक कि स्थिति का तनाव टूट नहीं जाता, या तो व्यवहार के रूप में ''हिस्टीरिया,'' ''अवसाद'' य ''मनोविकृति'', या क्रोधी कार्यों में, जिन्हें ''आत्म–केंद्रित'' कहा जाता है, या परिवार को छोड़ने और तलाक की मांग करने वाले लेबल। यह न केवल नैतिक रूप से गलत होगा, बल्कि महिलाओं को इस अधीनता को स्वीकार करने के लिए राजी करके परिवार को बचाने की कोशिश करने के लिए व्यावहारिक रूप से अयोग्य भी होगा। यदि दो–माता–पिता परिवारों को काम करना है, तो वे ऐसा करेंगे क्योंकि इस विनाशकारी गतिशील को हटा दिया गया है और क्योंकि महिलाओं ने काम और घर पर शक्ति और सम्मान की वास्तविक समानता प्राप्त की है।

4. निष्कर्ष

मुझे लगता है किसी भी बात को समझाने के लिए, कहानी सबसे सटीक माध्यम है। इसमें कम शब्दों में बहुत कुछ कहा जा सकता है। इसीलिए जनजीवन में यह सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। पहले कहानी का उद्देश्य उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता था। आज कहानी मानव–जीवन की भिन्न– भिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करती है। कठिन मुद्दे को कहानी कैसे सरल बनाती है ?

दुनियाँ के सभी महापुरुषों ने कहानी, कहावतें एवं उक्तियों का उपयोग किया है। इसका कारण यह है कि जब आप सीधे कुछ कहते हो, तो यह ज्यादा चोट करती है। सीधी अभिव्यक्ति बहुत तीखी, कड़वी, असभ्य एवं गंदी होती है। कहानी चीजों को सरल बनाती हैय यह चीजों को काव्यात्मक बनाती है। यह उन चीजों को कहने का उपाय है, जो कही नहीं जा सकतीं। कहानी कैसे सस्पेंस जगाती है ?

अन्नू सिंह ने अपनी सरल कहानियों में समाज में महिलाओं की वास्तविक स्थिति, उनकी अपेक्षा और वे समाज को कैसे देखती हैं, के बारे में बताया। उन्होंने बड़ी चतुराई और सरलता से जीवन के वास्तविक सत्य और समाज की वास्तविक स्थिति को व्यक्त किया। मैं उनकी कहानियों की सादगी और गहराई से प्रभावित हूं।

5. संदर्भ

1. अनु सिंह चौधरी, जयपुर लिटरेचर फेस्टिवल
2. अनु सिंह चौधरी, फेमिना

3. अनु सिंह चौधरी, सियाही

4. अपने पैरों पर दुनिया के साथ अनु एस चौधरी , शी हीरो, ,29 अगस्त 2014 को प्रकाशित

5. रामनाथ गोयनका एक्सीलेंस इन जर्नलिज्म अवार्ड्स: विजेताओं की सूची, 24 नवंबर, 2015 5:05:42 बजे

6. अनु सिंह चौधरी, लिंक्डइन प्रोफाइल

7. औरतों की जिंदगी के स्याह-सफेद पहलुओं का 'नीला स्कार्फ',aajtak.in, नई दिल्ली, 18 सितंबर 2014

8. 'मम्मा की डायरी' के बहाने कुछ कही-अनकही, aajtak.in, नई दिल्ली,15 मई 2015,

9. मनवी वहाणे, भाली लड़कियों की बुरी लड़कियाँ: किस्सा वही, कहानी नई, 25 सितंबर, 2019

10. भाली लड़कियों की बुरी लड़कियाँ ,27 दिसंबर, 2019 को बुक रिव्यू में प्रकाशित

11. पूजा साहू, पुस्तक समीक्षा: साए की तरह पीछा करने वाला एक अजनबी ऐसा भी .., प्रकाशित 14 जून, 2018 शाम 6:53 बजे